B.A. History Hons, Part: I
Paper: II, Unit: IV, Date: 13.10.2020 Lecture No: 18

Lession: पूँजीवाद का विकास

कार्ल मार्क्स के अनुसार जब हस्त-चालित उद्योग का स्थान यंत्र-चालित उद्योग ले लेता है तो सामन्तवादी युग का अंत पूँजीवादी युग का प्रारम्भ हो जाता है। पूँजीवादी व्यवस्था बड़े-बड़े कल कारखानों, कृत्रिम ऊर्जा से संचालित यंत्र, नगरीकरण, बाजारीकरण और लोकतांत्रिक राज्य व्यवस्था पर टिकी होती है जो विकास के चरम अवस्था में पहुँचकर लेनिन के अनुसार उपनिवेशवाद को जन्म देती है। यूरोप में पुनर्जागरण के बाद कई ऐतिहासिक परिघटनाएँ एक साथ घटित हुई, जिनमें वाणिज्यवाद के चरमोत्कर्ष, निरंकुश राजतंत्र के परिसीमन एवं सशक्त मध्यम वर्ग के उदय, आधुनिक वैज्ञानिक खोजों के विकास और यूरोप में धन के संकेन्द्रण का उल्लेख किया जा सकता है। जिस निरंकुश राजतंत्र के अधीन वाणिज्यवाद और उपनिवेशवाद का उदय हुआ था, यूरोप का मध्यम वर्ग उससे काफी लाभान्वित हुआ। इस मध्यमवर्ग ने सामन्तवाद के खात्मे के लिए राजा का समर्थन किया, जिसके फलस्वरूप निरंकुश राजतंत्रात्मक राष्ट्रीय राज्यों का निर्माण हुआ। बदले में राजकीय संरक्षण में मध्यम वर्ग की ताकत लगातार बढ़ती चली गई। अब उसके पास अपार सम्पत्ति और बुद्धि थी। सम्पत्ति को पूँजी बनाकर मध्यम वर्ग अपने बुद्धि कौशल के बदौलत आधुनिक वैज्ञानिक खोजों का उपयोग औद्योगिक क्रांति को अंजाम देने में लगा सकता था। औद्योगिक क्रांति को अंजाम देने से पहले से ही देशी और विदेशी उत्पादों को खपाने के लिए वाणिज्यवाद ने पहले से ही ऐसा बाजार तैयार कर रखा था, जहाँ न केवल उत्पादित मालों को बेचा जा सकता था बल्कि सस्ते कच्चे माल भी प्राप्त किए जा सकते थे। इसी प्रक्रिया के तहत 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में यूरोप में पूँजीवाद का उदय हुआ। इस नवीन आर्थिक का मूल स्त्रोत पूँजी थी, अतः इसे पूँजीवाद कहा जाता है।

पूँजीवाद के विकास में अर्थशास्त्रियों तथा राजनीतिक चिन्तकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिन्होंने पूँजीवाद के विकास के लिए अनुकूल राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थिति पैदा की। जहाँ परिस्थितियाँ अनुकूल थी वहाँ राजनीतिक संघर्ष और क्रांतियाँ हुई। पूरी सत्रहवीं शताब्दी के दौरान ब्रिटेन में राजा और संसद के बीच संघर्ष, अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम और फ्रांसीसी राज्यक्रान्ति इसके ज्वलन्त ऐतिहासिक उदाहरण हैं। जॉन लॉक ने राज्य को सामाजिक समझौते का परिणाम प्रमाणित कर यह उद्घोषित किया कि राज्य व्यक्ति के हितों के विरुद्ध कार्य नहीं कर सकता, क्योंकि राज्य का निर्माण ही मनुष्य के प्राकृतिक अधिकारों की रक्षा के लिए किया गया। लॉक ने जीवन, स्वतंत्रता एवं सम्पत्ति को प्राकृतिक अधिकार माना, जिसका अतिक्रमण या अपहरण कोई राज्यसत्ता या सरकार नहीं कर सकती। यदि कोई सत्ता नागरिकों के प्राकृतिक अधिकारों में हस्तक्षेप करती है तो ऐसी सत्ता को बदलने का नागरिकों को पूरा अधिकार ही नहीं, अपितु लॉक अनुसार पवित्र दायित्व भी बन जाता है। लॉक के एक कदम आगे बढ़ते हुए पूँजीवाद के अधिकारी अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने उद्योग और व्यापार को प्राकृतिक दिया जिसके अनुसार नागरिकों के आर्थिक मामलों में राज्य या सरकार को

अधिकार माना और अपने प्रसिद्ध 'अहस्तक्षेप के सिद्धांत' का प्रतिपादन किया, जिसके अनुसार नागरिकों के आर्थिक मामलों में राज्य या सरकार के हस्तक्षेप को निषेधित करने की बात कही गई। एडम स्मिथ का मानना था कि व्यक्तियों का निजी लाभ ही राष्ट्र का लाभ होता है और उसके सुखी के अनुरूप अपनी पुस्तक का संक्षिप्त नाम 'The wealth of Nation' रखा। उपयोगतावादी विचारक जे. एस. मिल ने नागरिकों की अलंघित स्वतंत्रता के सिद्धांत का प्रतिपादन कर पूँजीवादी विकास का वैचारिक मार्ग प्रशस्त किया। विकासवादी चिन्तक हरबर्ट स्पेन्सर ने कहा है कि जीवन, स्वतंत्रता और सुख की प्राप्ति मनुष्य मात्र के प्राकृतिक अधिकार हैं, जिसमें हस्तक्षेप करने का अधिकार राज्य को नहीं है। विकासवाद के प्रवर्तक डार्विन के 'अस्तित्व के लिए संघर्ष' और 'योग्यतम की उत्तरजीविता' के वैज्ञानिक प्राकृतिक सिद्धांतों को स्पेन्सर ने सामाजिक जीवन पर लागू कर पूँजीवाद के विकास की प्राकृतिक प्रक्रिया मानते हुए, इसकी सफलता के औचित्य को, सिद्ध किया। जाहिर है कि पूँजीवाद के विकास के लिए अनुकूल सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों के निर्माण के लिए और इसके विकास मार्ग की बाधाओं को दूर करने में अर्थशास्त्रियों और चिन्तकों ने महत्वपूर्ण वैचारिक योगदान दिया।

यह माना जाता है कि जिस दिन जेम्स वाट ने भाप की ऊर्जाशक्ति का पता लगाया, उसी दिन औद्योगिक क्रांति और पूँजीवाद का बीजारोपण हो गया। पुनर्जागरण ने आधुनिक विज्ञान तथा यांत्रिकी के विकास का दरवाजा खोला। भाप शक्ति का पता चलते ही ऐसे भारी भरकम यंत्रों और कलपुर्जों बनाए गए, जिनसे कृत्रिम ऊर्जा के उपयोग कर बड़े पैमाने पर उत्पादन शुरू किया जा सकता था। मध्यकाल के बाद वाणिज्यवाद के उत्तरोत्तर विकास के फलस्वरूप काफी धन था, जिसे उन्होंने पूँजी के रूप उपयोग कर भारी कल-कारखानों का निर्माण और उत्पादित मालों के वितरण की व्यवस्था की। जैसे-जैसे नए-नए उपभोक्ता सामग्रियों तथा उपकरणों के उत्पादन तकनीक का पता चला, उसी अनुपात में औद्योगीकरण और बाजार का विस्तार होता गया। वाणिज्यवाद के दौर में विकसित यातायात एवं संचार के साधनों में कृत्रिम ऊर्जा के प्रयोग ने इसकी रफ्तार और मात्रात्मक क्षमता का अकल्पनीय विकास हुआ। इससे न केवल उत्पादित सामग्रियों को बाजार में खपाने में मदद मिली, बल्कि सस्ते दामों में कच्चे मालों को कल-कारखानों तक लाने में सहूलियत हुई। कोयला और तेल जैसे खनिज पदार्थों और बिजली के ऊर्जा स्रोत के रूप में उपयोग ने तो उद्योगों की विविधता और इसके भारी भरकम संरचना में भारी इजाफा पैदा किया। इसके लिए भारी पूँजी जब कम पड़ने लगी तो व्यापार स्वयं कम्पनियों, ट्रस्टों, निगमों का गठन कर पूँजी की व्यवस्था की गई और पूँजीवाद का दैत्य राज्य की सीमाओं से पार वैश्विक हो गया। पूँजीवादी देशों ने सुरक्षित बाजार के लिए साम्राज्यवादी एवं औपनिवेशिक विस्तार की गति को तेज किया और उनके बीच अधिकाधिक संसार को आपस में बाँट लेने की होड़ मच गयी। यह पूँजीवाद का चरम विद्रूप था, जिसमें एकाधिकारवादी प्रवृत्ति तथा विश्व प्रभुत्व की एशिया, अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका, द्वीप समूह और लातिनी अमेरिकी देशों पर यूरोपीय देशों का कब्जा और उनका शोषण-उत्पीड़न पूँजीवाद के चरित्र विशेष का ही परिणाम था।

डॉ० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर